No. ५६५०

Title श्रीप्रत्यंगिरा सहस्रनाम स्तोत्रम्

Author +

Extent १२

Subject तन्त्रम् संपूर्णम्

#F 5850

F – 12

Complete

नं० ५६५०-घ

प्रत्यंगिरासहस्रनाम स्तोत्रम् (तन्त्रम्)

पत्राणि १२ (द्वादशानि) (संपूर्णम्)

नं० ११५०

नैं०११९०क
प्रत्यङ्गिरा सहस्रनाम
१२ पत्र
तन्त्र

नं० ५६५०-घ

प्रत्यंगिरा सहस्रनाम॥ (तन्त्रम्)
स्तोत्रम्
पत्राणि १२ (द्वादशानि)

प्र·
स·
१

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री महाप्रत्यंगिरायै नमः ॥ श्री गुरवे नमः ॥ श्री
ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि सांप्रतं तत्पुरातनं ॥ सहस्रनाम
परमं प्रत्यंगिरार्थसिद्धये ॥ सहस्रनामपाठेन सर्वं विजयी भवेत् ॥
पराभवो न चास्यास्ति सभायां वा वने रणे ॥ २ ॥ तथा तुष्टा भवेद्देवी
प्रत्यंगिरास्य पाठतः ॥ यथा भवति देवेशि साधकः शिव एव हि ॥ अ
श्वमेधसहस्राणि वाजपेयस्य कोटयः ॥ सकृत्पाठेन जायंते प्रसन्ना
यत्तारा भवेत् ॥ भैरवोस्य ऋषिश्छंदोनुष्टुप् देवी समीरिता ॥ प्रत्यंगि
रा विनियोगः सर्वसंपत्तिहेतवे ॥ सर्वकार्येषु संसिद्धिः ॥ सर्वसंपत्ति
दा भवेत् ॥ एवं ध्यात्वा पठेद्देतद्यदिच्छेदात्मनो हितं ॥ ६ ॥ ॐ अस्य श्री
प्रत्यंगिरा सहस्रनामस्तोत्र महामंत्रस्य ॥ भैरव ऋषिः ॥ शिरसि ॥ अनुष्टु

पृ छंदः॥ मुखे॥ श्रीमहाप्रत्यंगिरादेवता॥ हृदि॥ क्ष्रीं बीजं॥ गुह्ये॥।
ह्रीं शक्तिः पादयोः॥ स्वाहा कीलकं॥ नाभौ॥ परकृत्याविनाशार्थे जपे
पाठे विनियोगः॥ सर्वांगेषु॥ अथ करन्यासः॥ ॐ क्ष्रां अंगुष्ठाभ्यां न । क्ष्रैं। तर्जनीभ्यां॥
मः॥ क्ष्रूं॥ मध्यमाभ्यां नमः॥ क्ष्रैं॥ अनामिकाभ्यां नमः॥ क्ष्रौं॥ कनिष्ठका
भ्यां नमः॥ क्ष्रः॥ करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ इति करन्यासः॥ अथ
षडंगन्यासः॥ क्ष्रां॥ हृदयाय नमः॥ क्ष्रीं॥ शिरसे स्वाहा॥ क्ष्रूं॥ शिखायै
वौषट्॥ क्ष्रैं॥ कवचाय हूम्॥ क्ष्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ क्ष्रः॥ अस्त्राय फ
ट्॥ इति षडंगन्यासः॥ अथ ध्यानम्॥ आशांबरा मुक्तकचा घनच्छ
विर्ध्येया सचर्मासिकराहिभूषणा॥ दंष्ट्रोग्रवक्त्रा ग्रसिताहितान्व-
या प्रत्यंगिरा शंकरतेजसेरिता॥ इति ध्यानम्॥ ॐ देवी॥ प्रत्यंगिरा

प्र॰
स॰
२

2

दिव्या॥ सरसा॥ शशिशेखरा॥ सुमना॥ सामिधेनी॥ च॥ समस्तसुरशेमु
षी॥ सर्वसंपत्तिजननी॥ सर्वदासिंधुसेविनी॥ शंभुसीमंतिनी॥ सोमो॥
सुराराध्या॥ सुधारसा॥ २॥ रसा॥ रसवतीवेला॥ वन्या॥ च॥ वनमालिनी॥
वनजाक्षी॥ वनचरी॥ वनी॥ वनविनोदिनी॥ ३॥ वेगिनी॥ वेगदा॥ वेगब
लास्या॥ च॥ बलाधिका॥ कला॥ कलप्रिया॥ कोली॥ कोमला॥ कालका
मिनी॥ ४॥ कमला॥ कमलास्या॥ च॥ कमलस्था॥ कलावती॥ कुलीना
कुटिला॥ कांता॥ कोकिला॥ कलभाषिणी॥ ५॥ कीरकेलिः कला॥ का
ली॥ कपालिन्य॥ पि॥ कालिका॥ केशिनी॥ च॥ कुशावर्त्ती॥ कौशांबी॥ के
शव॥ प्रिया॥ ६॥ काशी॥ काशा॥ महाकाशी॥ संकाशा॥ कोशदायिनी॥
कुंडली॥ कुंडलास्या॥ च॥ कुंडलांगदमंडिता॥ ७॥ कुणपाली॥ कुमुदि-

नी॥ कुमुदा॥ प्रीति॥ वर्धिनी॥ कुंदप्रिया॥ कुंदरुचिः॥ कुरंगमदमोदिनी ॥ ८ ॥
कुरंगनयना॥ कुंदा॥ कुरुवृंदाभिनंदिनी॥ कुसुंभकुसुमा॥ कांचीक्कण
त्किंकिणिका कटुः॥ ९॥ कठोरा॥ करुणा॥ काष्ठा॥ कौमुदी॥ कंबुकंठि-
नी॥ कपर्दिनी॥ कपटिनी॥ कठिनी॥ कालकंठिका॥ १०॥ कीरहस्ता॥ कु
मारी॥ च॥ कुरुंदा॥ कुसुमप्रिया॥ कुंजरस्था॥ कुंजरता॥ कुंभी॥ कुंभस्त
नद्वया॥ ११॥ कुंभिगा करिभोरुश्च॥ च॥ कदली॥ दलशालिनी॥ कुपि
ता॥ कोटरस्था॥ च॥ कंकाली॥ कंदरोदरा॥ १२॥ एकांतवासिनी॥ कांची
कंपमानशिरोरुहा॥ १॰॥ कादंबरी॥ कदंबस्था॥ कुंकुमप्रेमधारि-
णी॥ १३॥ कुटुंबिनी प्रिया कृतिः॥ क्रतुः॥ क्रतुकरी प्रिया॥ कात्याय
नी॥ कृत्तिका च॥ कार्त्तिकेयप्रवर्तिनी॥ १४॥ कामपत्नी॥ कामदात्री

कामेशी॥ कामवंदिता॥ कामरूपा॥ कामगतिः॥ कामात्ता॥ काम-
मोहिता॥ खड्गिनी॥ खेचरी॥ खड्गा॥ खंजरीटेक्षणा॥ खला॥ १५॥ खरगा
खरनासा॥ च॥ खरास्या॥ खेलनप्रिया॥ खराश्वा॥ खेटिनी॥ खट्वा॥ ख
गा॥ खट्वांगधारिणी॥ १६॥ खलखंडिनि वि॥ ख्याता॥ खंडिता॥ खंडनी
स्थिता॥ खंडप्रिया॥ खंडखाद्या॥ सेंदुखंडा॥ च॥ खंडिनी॥ १७॥ गंगा॥ गोदा
वरी॥ गौरी॥ गोमत्यपि॥ च॥ गौतमी॥ गया॥ गेया॥ गगनगा॥ गारुडी॥ ग
रुडध्वजा॥ १८॥ गीता॥ गीतप्रिया॥ गोपा॥ गंडप्रीता॥ गुणि॥ गिरा॥ गौर्गौ
री॥ मंदमदना॥ गोकुला॥ गोप्रतारिणी॥ १९॥ गोदा॥ गोविंदिनी॥ गूढा॥ नि
गूढा॥ गूढविग्रहा॥ गुंजिनी॥ गजगा॥ गोपी॥ गोत्रक्षयकरी गदा॥ २०॥
गिरिभूपालदुहिता॥ गोगा॥ गोकुलवर्धिनी॥ घनस्तनी॥ घनरुचि॥

र्घेनोरु(च)खन निःस्वना॥२१॥ घूत्कारिणी॥ घूघकपरिवारिता॥ घंटानादप्रि
या॥ घंटा॥ घना॥ घोटकवाहिनी॥२२॥ घोररूपा॥ च॥ घोरा॥ चा॥ घूती॥ प्र
ति घना॥ घनी॥ घृताची॥ घनपुष्टी॥ घा॥ घटा॥ घनघटाऽमृता॥२३॥ घट
स्था॥ घटना॥ घोषघातपातनिवारिणी॥ चंचरीकी॥ चकोरी॥ च॥ चामुंडा
चीरधारिणी॥२४॥ चातुरी॥ चपला॥२··॥ चक्रचला॥ चेला॥ चला॥ चला॥
चतुश्चिरंतना॥ चाका॥ चिक्या॥ चामीकरच्छविः॥२५॥ चापिनी॥ चपला॥
चंमूश्चिंता॥ चिंतामणि॥ श्चिता॥ चातुर्वर्ण्यमयी॥ चंचुः॥ चौरा॥ चायीं॥
चमत्कृतिः॥२६॥ चक्रवर्तिवधू॥ श्चक्रा॥ चक्रांगा॥ चक्रमोदिनी॥ चेत
श्चरी॥ चित्तवृत्ति॥र चेता॥ चेतनप्रदा॥२७॥ चांपेयी॥ चण्पकप्रीति॥ श्चं
डी॥ चंडालवासिनी॥ चिरंजीवितटा चिंचा॥ तरुमूलनिवासिनी॥ चि

पु॰
स॰
५

छुरिकाछत्रमध्यस्था ॥ छिद्रा ॥ छेदकरी ॥ छिदा ॥ २८ ॥ छुछुंदरीपल
प्रीति ॥ छुछुंदरीनिभस्वना ॥ छलिनी ॥ छलदा ॥ छन्ना ॥ छिटिका ॥ छे
ककृत्तथा ॥ २९ ॥ छद्मिनी ॥ छांदसी ॥ छाया ॥ छायाकृच्छदिरित्य
पि ॥ जया ॥ च ॥ जयदा ॥ जाति ॥ जयस्था ॥ जयवर्धिनी ॥ ३० ॥ जपापुष्पप्रि
या ॥ जप्या ॥ जृंभिनी ॥ जमला ॥ युता ॥ जंबूप्रिया ॥ जयस्था ॥ च ॥ जंगमा ॥
जंगमप्रिया ॥ ३१ ॥ जंतु ॥ जंतुप्रधाना ॥ च ॥ जरत्कर्णी ॥ जरद्गवा ॥ जाति-
प्रिया ॥ जीवनस्था ॥ जीमूतसदृशच्छविः ॥ ३२ ॥ जन्या ॥ जनहिता ॥ जा
या ॥ जंभभिज्जंभमालिनी ॥ जवदा ॥ जववद्धाहा ॥ जवानी ॥ ज्वरहा ॥ ज्वरा ॥ ३३ ॥
फंफा ॥ ऽनिलमयी ॥ र्फंफा ॥ फेत्कारकरा ॥ च ॥ सा ॥ फिंटीशा ॥ फम्य
कृत ॥ फंपा ॥ फंपत्रासनिवारिणी ॥ ३४ ॥ टकारस्था ॥ टंकधरा ॥ टंका

रा॥ करशाटिनी॥ ठक्कुरा॥ ठीत्कृति॥ श्चैव॥ ठिंठीरवसमावृता॥ ठंठा
निलमयी॥ ठंठा॥ ठणत्कारकरा॥ च॥ सा॥ २५॥ डाकिनी॥ डामरी॥ चै
व डिंडिमध्वनिनंदिनी॥ ढक्का॥ स्वना॥ प्रिया ढक्का॥ तपिनी॥ तापिनी
तथा॥ २६॥ तरुणी॥ तुंदिला॥ तुंदा॥ तामसी॥ च॥ तपःप्रिया॥ ताम्रा॥
ताम्रांबरा॥ ताली॥ तालीदलविभूषणा॥ २७॥ तुरंगा॥ त्वरिता॥ त्रेता॥
तोतुला॥ तोदिनी॥ तुला॥ तापत्रयहरा॥ तप्ता॥ तालकेशी॥ तमालिनी ॥२८॥
तमालदलवच्छ्यामा॥ तालस्वनवती॥ तमी॥ तामसी॥ च॥ तमिस्रा॥
च॥ तीव्रा॥ तीव्रपराक्रमा॥ २९॥ तटस्था॥ तिलतैलाक्ता॥ तरणी॥ तपन
द्युतिः॥ तिलोत्तमा॥ तिलककृत्॥ तारकाधीशशेखरा॥ ३०॥ तिलपुष्प
प्रिया॥ तारा॥ तारकेशी॥ कुटुंविनी॥ स्थाणुपत्नी॥ स्थितिकरी॥ स्थलस्था

प्र॰ स॰ ५

5

स्थलवर्धिनी ॥ ४१ ॥ स्थितिः स्थैर्या ॥ स्थविष्ठा ॥ च ॥ स्थापनी ॥ स्थलविग्रहा
दंतिनी ॥ दंडिनी ॥ दीना ॥ दारिद्रा ॥ दीनवत्सला ॥ ४२ ॥ देवी ॥ देववधू ॥ दैत्य
दमनी ॥ दंतभूषणा ॥ दयावती ॥ दमवती ॥ दमदा ॥ दाडिमस्तनी ॥ ४३ ॥ दं
दशूकनिभा ॥ दैत्यदारिणी ॥ देवतानना ॥ दोलाक्रीडा ॥ दलायुश्च ॥ दं
पती ॥ देवतामही ॥ ४४ ॥ दशा ॥ दीपस्थिता ॥ दोषा ॥ दोषहा ॥ दोषकारि
णी ॥ दुर्गा ॥ दुर्गार्तिशमनी ॥ दुर्गमा ॥ दुर्गवासिनी ॥ ४५ ॥ दुर्गंधनाशिनी ॥
दुःस्था ॥ दुःस्वप्नशमकारिणी ॥ दुर्वारा ॥ दुंदुभिध्वाना ॥ दूरस्था ॥ दूर-
वासिनी ॥ ४६ ॥ दरहा ॥ दरहा ॥ दात्री ॥ दायादा ॥ दुहिता ॥ दया ॥ धुरंधरा ॥
धुरीणा ॥ च ॥ धौरेयी ॥ धनदायिनी ॥ ४७ ॥ धीरा ॥ धीरा ॥ धरित्री ॥ च ॥ ध
र्मदा ॥ धीरमानसा ॥ धनुर्धरा ॥ च ॥ धमिनी ॥ धूर्ता ॥ धूर्तपरिग्रहा ॥ ४८ ॥ ।

धूमवर्णा ॥ धूमपाना ॥ धूमला ॥ धूममोहिनी ॥ नलिनी ॥ नंदिनी ॥ नं-
दा ॥ नादिनी ॥ नंदबालिका ॥ ४९ ॥ नवीना ॥ नर्मदा ॥ नर्मिर्निमिर्निय-
मनिश्चया ॥ निर्मला ॥ निगमाचारा ॥ निम्नगा ॥ नग्रकामिनी ॥ ५० ॥ नी-
तिर्निरंतरा ॥ नग्नी ॥ निर्लेपा ॥ निर्गुणा नतिः ॥ नीलग्रीवा ॥ निरीहा ॥ च।
निरंजनजनी ॥ नवी ॥ ५१ ॥ नवनीतप्रिया ॥ नारी ॥ नरकार्णवतारिणी ॥
नारायणी ॥ निराकारा ॥ निपुणा ॥ निपुणप्रिया ॥ ५२ ॥ निशा ॥ निद्रा ॥
नरेंद्रस्था ॥ नमिता ॥ ऽनमिता ॥ ऽपिंच ॥ निर्गुंडा ॥ निर्मीसा ॥ ऽनामिका
निमा ॥ ५३ ॥ पताकिनी ॥ पताका ॥ च ॥ पलप्रीति ॥ र्यशस्विनी ॥ पीना
पीनस्तनी ॥ पत्नी ॥ पवनाशनघ्रागायिनी ॥ ५४ ॥ परा ॥ ऽपरा ॥ कलापा
का ॥ पाककृत्यरतिः ॥ प्रिया ॥ पवनस्था ॥ सुपवना ॥ तापसप्रीतिव

प्र॰ र्धिनी॥५५॥पशुवृद्धिकरी॥पुष्टिः॥पोषणी॥पुष्पवर्धिनी॥पुष्पिणी॥
स॰ पुस्तककरा॥पुन्नागतलवासिनी॥५६॥पुरंदरप्रिया॥प्रीतिः॥पु
८६ रमार्गनिवासिनी॥पाशी॥पाशकरा॥पाशबंधुहा॥पांसुला॥पशुः॥
6 ५७॥पटुः॥पटासा॥परशुधारिणी॥पाशिनी॥तथा॥पापघ्नी॥पति।
पत्नी॥च॥पतिता॥ऽपतिता॥ऽपिच॥५८॥पिशाची॥च॥पिशाचघ्नी
पिशिताशनतोषिता॥पानदा॥पानपात्रा॥च॥पानदान॥करोद्य
ता॥५९॥पेया॥प्रसिद्धा॥पीयूषा॥पूर्णा॥पूर्णमनोरथा॥पतङ्गभी
पतङ्गात्रा॥पातपुण्यप्रिया॥पुरी॥६०॥पंकिला॥पंकमग्ना॥च॥पा
नीया॥पंजरस्थिता॥पंचमी॥पंचयज्ञा॥च॥पंचता॥पंचमप्रिया॥६१॥
पंचमुद्रा॥पुंडरीका॥पिकी॥पिंगललोचना॥प्रियंगुमंजरी॥पिंडी

पिंडीता॥ पांडुरप्रभा॥ ९३॥ प्रेतासना॥ प्रिया॥ लुस्था॥ पांडुघ्नी॥ पीनसा
पहा॥ फलिनी॥ फलदात्री॥ च॥ फलश्रीः॥ फणिभूषणा॥ पूत्कारका
रिणी॥ स्फारा॥ फुल्लों॥ फुल्लांबुजासना॥ फिरंगहा॥ स्फीतमतिः॥ स्फी
तिः॥ स्फीतकरी॥ तथा॥ ९४॥ बलमाया॥ बलाराति॥ र्बलिनी॥ बलव-
र्धिनी॥ वेणुवाद्या॥ वनचरी॥ विरावजनयित्र्यपि॥ ९५॥ विद्या॥ विद्या
प्रदा॥ विद्याबोधिनी॥ बोधदायिनी॥ बुद्धमाता॥ च॥ बुद्धा॥ च॥ वनमा
लावती॥ वरा॥ ९६॥ वरदा॥ वारुणी॥ बीणाबीणवादनतत्परा॥ वि
नोदिनी॥ विनोदस्था॥ वैस्नवी॥ विस्नुवल्लभा॥ ९७॥ विद्या॥ वैद्यचिकि
त्सा च॥ विवशा॥ विश्वविश्रुता॥ विद्युत्कविकला॥ वेत्रा॥ वितंद्रा॥ विग
तज्वरा॥ ९८॥ विराचा॥ विविधा॥ रावा॥ बिंबोष्टी॥ बिंबा॥ वत्सला॥ विंध्य

प्र॰ स्या॥वीरवंद्या च॥वरीयान पराधवित्॥६९॥वेदांतवेद्या॥वेद्या॥च॥
स॰ वैद्या॥च॥विजयप्रदा॥विरोधवर्धिनी॥वंध्या॥बंध्याबंधनिवारिणी॥७०॥
७ भगिनी॥भगमाला॥च॥भवानी॥भवभाविनी॥भीमा॥भीमानना॥
भैमी॥भंगुरा॥भीमदर्शना॥७१॥भिल्ली॥भल्लधरा॥भीरु॥भेरुंडे भ
भयापहा॥भगसर्पिण्य॥ऽपि॥भगा॥भगरूपा॥भगालया॥७२॥भ
गासना॥भगामोहा॥भेरी॥भांकाररंजिनी॥ भीषणा॥ऽभीषणा॥सर्वा
भगवत्या॥ऽपि भूषणा॥७३॥भारद्वाजा॥भोगदात्री॥भवघ्नी॥भूतिभू
षणा॥ भूतिदा॥भूमि॥दात्री च॥भूपतित्वप्रदायिनी॥७४॥भ्रमरी॥भ्रा
मरी॥नीला॥भूपालमुकुटस्थिता॥मत्ता॥मनोहरा॥माना॥मानिनी॥
मोहिनी॥महा॥७५॥ महालक्ष्मी॥मदक्षीवा॥मदिरा॥मदिरालया॥ म

दोद्धता॥मतंगस्था॥माधवी॥मधुमंथिनी॥७६॥मेधा॥मेधाकारी मे
ध्या॥मध्या॥मध्यवयस्थिता॥मद्यपा॥मांसला॥मत्स्या॥मोदिनी॥मै
थुनोद्धता॥७७॥मुद्रा॥मुद्रावती॥माता॥माया॥महिम॥मंदिरा॥महा
माया॥महाविद्या॥महामारी॥महेश्वरी॥७८॥महादेव॥वधू॥मीन्या
मथुरा॥मेरुमंडला॥मेदस्विनी॥मेदसुश्री महिषासुरमर्दिनी॥७९॥
मंडपस्था॥मठस्था॥मा॥माला॥मालाविलासिनी॥मोत्तदा॥मुंडमा
ला च॥मदिरा॥गर्वगर्भिता॥८०॥मातंगिनी॥च॥मातंगी॥मातंगतनया
मधुः॥मधुस्रवा॥मधुरसा॥मधूका॥कुसुमप्रिया॥८१॥यामिनी॥यामि
नी॥नाथभूषा॥या॥वकारंजिता॥यवांकुरप्रिया॥या॥मा॥यवनीयव
नाधिपा॥८२॥यमघ्नी॥यमवाणी॥च॥यजमानस्वरूपिणी॥यत्ता॥यज्वा

प्र॰ स॰ ८ 8

यजुर्विद्या॥यशोनिकरकारिणी॥८३॥ यज्ञसूत्रप्रदा॥ज्येष्ठा॥यज्ञका
र्मकरी॥यशाः॥ यशस्विनी॥यज्ञसंस्था॥यूपस्तंभनिवासिनी॥८४॥
रंजिता॥राजपत्नी॥च॥रमा॥रेखा॥रवी॥रणी॥रजोवती॥रजश्चित्रा॥रज
नी॥रजनीपतिः॥८५॥ रागिनी॥राजिनी॥राज्या॥राज्य॥रजश्चित्रा रजो॥
दा॥राज्यवर्धिनी॥ राजन्वती॥राजनीति॥स्तुर्या॥राजनिवासिनी॥८६॥
रमणी॥रमणीया॥च॥रामा॥रामवती॥रतिः॥ रेतोवती॥रतोत्साहा॥रो
गहा॥रोगा॥कारिणी॥ ८७॥रंगा॥रंगवती॥रागा॥रागज्ञा॥रागिनी॥रणा॥
रंजिका॥ रजकी॥रंजा॥रंजिनी॥रक्तलोचना॥ ८८॥रक्तचर्मधरा॥रंत्री
रक्तस्था॥रक्तवाहिनी॥रंभा॥रंभाफलप्रीतिः॥रंभोरू॥राघवप्रिया॥८९॥
रंगभृद्रंगमधुरा॥रोदसी रोदसीगृहा॥रोगकर्त्री॥रोगहर्त्री॥रोगभृत्॥द्रो

गशापिनी ॥९०॥ वंदी ॥ वंदिस्तुता ॥ बंधु ॥ बंधूककुसुमाधरा ॥ वंदिता ॥ वं
दिमाता च ॥ बंधुरा ॥ बैंदवी ॥ विभा ॥९१॥ विंकी ॥ विंकपला ॥ विंका ॥ विंक
स्था ॥ विंकवत्सला ॥ वेदै विलग्ना ॥ विघ्ना च ॥ विधि ॥ विधिकरी ॥ विया ॥९२॥
शंखिनी ॥ शंखनिलया ॥ शंखमालावती ॥ शमी ॥ शंखपात्राशिनी ॥ शंखा
शंखगला ॥ शशी ॥९३॥ शिंबी ॥ शरावती ॥ श्यामा ॥ श्यामांगी ॥ श्यामलोचना ॥
श्मशानस्था ॥ श्मशाना ॥ श्मशाना ॥ च ॥ श्मशानस्थलभूषणा ॥९४॥ शर्मदा ॥
शमहर्त्री ॥ च ॥ शाकिनी ॥ शंकुशेखरा ॥ शांतिः ॥ शांतिप्रदा ॥ शेषा ॥ शेषस्था ॥
शेषशायिनी ॥९५॥ शेमुषी ॥ शोषिणी ॥ शौरी ॥ शीरी ॥ शौर्या ॥ शारा ॥ शारिः ॥
शापदा ॥ शापहारी ॥ श्रीः ॥ शंपा ॥ शपथदायिनी ॥९६॥ शृंगिणी ॥ शृंगि ॥
पलभुक् ॥ शंकरी ॥ शांकरी ॥ च ॥ सा ॥ शंका ॥ शंकापहा ॥ संस्था ॥ शाश्वती ॥

प्र॰ शीतला॥शिवा॥९७॥शवस्था॥शवभुक्॥शैवी॥शाववर्णी॥शवोदरी॥
स॰ शायिनी॥शावशायना॥शिंशिपा॥शिंशिपायना॥शवाकुंडलिनी॥
९ शैवा॥शंकरा॥शिशिरा॥शिरा॥शवकांची॥शवश्रीका॥शवमाला॥श-
9 वाकृतिः॥९९॥शंपिनी॥शंकुशक्तिः॥शं॥शंतनुः॥शीलदायिनी॥सिं-
धुः॥सरस्वती॥सिंधुसुंदरी॥सुंदरानना॥१००॥साधुसिद्धिः॥सिद्धिदात्री॥
सिद्धा॥सिद्धसरस्वती॥संततिः संपदा॥संपत्संवि॥त्संपत्तिदायिनी॥१॥
सपत्नी॥सरसा॥सारा॥सरस्वतिकरी॥सुधा॥सरः॥समा॥समाना॥च॥समा-
राध्या॥समस्तदा॥समिद्धा॥समदा॥संमा॥संमोहा॥समदर्शना॥समि-
तिः॥समिधा॥सीमा॥सावित्री॥संविदा सती॥२॥सवना॥सवनाधा-
रा॥सावना॥समरा समी॥समीरा॥सुमनाः॥साध्वी॥सध्रीचीन्या॥ऽस

ह्रायिनी॥४॥ हंसी॥हंसगति॥हंसा॥हंसोज्ज्वलनिचोलयुक्॥ हलिनी॥
हलदा॥हाला॥हरश्रीः॥हरवल्लभा॥५॥हेला॥हेलावती॥ह्रेषा॥ह्रेषस्था॥
ह्रेषवर्धिनी॥हंता॥हानि॥हेयाक्रा॥हृत्॥हंतहा॥हंतहारिणी॥६॥हुंका-
री॥हंतकृ॥हुंका॥हीहा॥हाहा॥हताहिता॥हेमप्रभा॥हरवती॥हारीता॥ह
रिसंमता॥७॥होरी॥होत्री॥होलिका॥च॥होम्या॥होमा॥हवि॥हेरिः॥हारि
णी॥हरिणीनेत्रा॥हिमाचलनिवासिनी॥८॥लंबोदरी॥लंबकर्णा॥
लंबिका॥लंबविग्रहा॥लीला॥लीलावती॥लोला॥ललना॥लालिताल
ता॥९॥ललामलोचना॥लोच्या॥लोलाक्षी॥लक्ष्मणा॥लटा॥लंपती॥लुं
पति॥लुंपा॥लोपामुद्रा॥ललंतिनी॥१०॥लतिका॥लंघिका॥लंघा॥लघि
मा॥लघुमध्यमा॥लघीयसी॥लघूदकी॥लूता॥लूतनिवारिणी॥११॥

ष० लोमप्रदा॥ लोमशलोम्नी॥ च॥ लुलती॥ लुल्लुलुं पिनी॥ लुलायस्था॥ च॥ लह
स० री॥ लंकापुरपुरंदरी॥ ९२॥ लक्ष्मी॥ लक्ष्मीप्रदा॥ लक्ष्या॥ लक्ष्यबलगति॥ प्र
९ दा॥ क्षण क्षपा॥ क्षणा॥ क्षीणा॥ क्षमा॥ क्षांतिः॥ क्षमावती॥ ९३॥ क्षामा॥ क्षा
१० मोदरी॥ क्षोणी॥ क्षोणिभृ॥ क्षत्रियांगना॥ क्षपा॥ क्षपाकरी॥ क्षीरा॥ क्षीर
क्षयकरी० दा॥ क्षीरसागरा॥ ९४॥ क्षमंकरी॥ क्षयभृ॥ क्षयदा क्षतिः॥ क्षुरंती॥ क्षु
द्रिका॥ क्षुद्रा॥ क्षुत्क्षामा॥ क्षरपातका॥ १०००॥ ९५॥ मातुः सहस्रनामेदं प्र
त्यंगिर्याः प्रदायकं॥ यः पठेत्प्रयतो नित्यं दरिद्रो धनदो भवेत्॥ ९६॥ प्र
नाचांतः पठेन्नित्यं सचापि स्यान्महेश्वरः॥ मूकः स्याद्वाक्पतिर्देवी रो
गीनी रोगतां भजेत्॥ ९७॥ अपुत्रः पुत्रमाप्नोति त्रिषु लोकेषु विश्रुतं॥
वंध्यापि सूते तनयान्गावश्च बहुदुग्धदाः॥ ९८॥ राजानः पादनम्रा

स्युस्तस्य दाससर्वस्फुटाः ।। अपरः यः संततं यांति मनसा संस्मृताअपि ।।१९।।
दर्शनादेव जायंते नरा नार्यो पि तद्वशाः ।। कर्त्ता हर्त्ता स्वयं वीरो जायते
नात्र संशयः ।।२०।। यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितं ।। इरितं
न च तस्यास्ति नास्ति शोकः कदाचन ।।२१।। चतुष्पथेऽर्धरात्रे च यः पठे
त्साधकोत्तमः ।। एकाकी निर्भयो धीरो दशावर्त्तं नरोत्तमः ।।२२।। मनसा
चिंतितं कार्यं तस्य सिद्ध्यत्य संशयं ।। विना सहस्रनाम्नां यो जपेत्मंत्रं क
दाचन ।।२३।। न सिद्धो जायते तस्य मंत्रः कल्पशतैरपि ।। कुजवारे श्म
शाने च मध्याह्ने यो जपेत्तथा ।।२४।। शतावर्त्या स जायेत कर्त्ता हर्त्ता नृ
णामिह ।। रोगार्त्तो यो निशीथांते पठेदंभसि संस्थितः ।।२५।। सद्यो नीरो
गतामेति यदि स्यान्निर्भयस्तदा ।। अर्धरात्रे श्मशाने वा शनिवारे जपे

पु॰ स॰ ११

न्मनं तु॥२६॥ अष्टोत्तरसहस्रं तु दशवारं जपेन्नतः॥ सहस्रनाममेत
द्धि तदायाति स्वयं शिवा॥ महापवनरूपेण घोरगोमायुनादिनी॥
तदा यदि न भीतिः स्यात्ततो देहीति वाग्भवेत्॥२८॥ तदा पशुबलिं
दद्यात् स्वयं गृह्णाति चंडिका॥ यथेष्टं च वरं दत्वा याति प्रत्यंगिरा शि
वा॥२९॥ रोचनागुरुकस्तूरी॥ कर्पूरमदचंदनैः॥ कुंकुमप्रथमाभ्यां
तु॥ लिखितं भूर्जपत्रके॥३०॥ शुभनक्षत्रयोगे तु समभ्यर्च्य घटांत
रे॥ कृतसंपातनात्सिद्धं धार्यं तद्दक्षिणे करे॥ सहस्रनाम स्वर्णस्थं॥
कंठे वापि जितेंद्रियः॥ तदा यंत्रप्रणमेन्मंत्री क्रुद्धः सम्रियते नरः॥३१॥
यस्मै ददाति च स्वस्ति स भवेद्धनदोपमः॥ दुष्टश्वापदजंतूनां न भीः
कुत्रापि जायते॥३२॥ बालकानामियं रक्षा गर्भिणीनामपि ध्रुवं॥ मोह

न स्तंभनाकर्षीमारणोच्चाटनादि च ॥२४॥ यंत्रपारणतो नूनं सिद्धं ते
साधकस्य च ॥ नीलेवस्त्रे विलिखितं ध्वजायां यदि तिष्ठति ॥२५॥ तदा
नष्टा भवत्येव सुचंडा परवाहिनी ॥ एतज्जप्तं महाभस्म ललाटे यदि
धारयेत् ॥२६॥ तद्दर्शनत एवास्युः प्राणिनस्तस्य किंकराः ॥ राजप
त्न्योपि वश्याः स्युः किमन्याः परयोषितः ॥२७॥ एतज्जपन्निशितो येमा
से केन महाकविः ॥ पंडितश्च महावादी जायते नात्र संशयः ॥२८॥
शक्तिं संपूज्य देवेशि पठेत्स्तोत्रवरं शुभं ॥ इहलोके सुखं भुक्त्वा परत्र
त्रिदिवं व्रजेत् ॥२९॥ इति नामसहस्रं तु प्रत्यंगिरमनोहरं ॥ गोप्यं गु
ह्यतमं लोके गोपनीयं स्वयोनिवत् ॥३०॥ इति श्रीरुद्रयामले तंत्रे दश
विद्यारहस्ये प्रत्यंगिरासहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥ ॥ शुभम् ॥ ॥

प्र॰
सं॰
१२
12

श्री प्रत्यंगिरा सहस्रनाम स्तोत्रम् (तन्त्रम्)
पत्राणि १२ (द्वादशानि) (संपूर्णम्)

